ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
बिसवाँ सीतापुर

-- मन की धार पलटो -

सद्गुरु के अध्यात्म में, एक ही धार का खेल !

मन की धार को पलट दो, परमातम से मेल !!

यही धार भागीरथी, यही त्रिवेणी जान !

इसी धार को पलटना, सद्गुरु का है ज्ञान !!

यथा पिण्ड ब्रम्हाण्ड सो, खोज त्रिवेणी धार !

जीव इसी से मुक्त हो, यही सभी का सार !!

देव लोक तेरा हुआ, प्रकृति हुई अनुरूप !

शासन इस पर तुम करो, तुम्ही बन गये भूप !!

नफरत न कर किसी से, करो सभी से प्यार !

सभी तुम्हारे हो गये, प्रकृति और संसार !!

अपना मानो सभी को, करो सभी से प्यार !

जीव सभी तेरे हुए, तेरा ही अधिकार !!

राजा तो तुम बन गये, संचालन करना जान !

तत्व सभी तेरे हुए, इनका संचालन जान !!

बंधन चौरासी कटे, भवसागर और पाप !

कर्म सभी अकर्म हो, मोक्ष, मुक्ति सब पास !!

मन, कौवा से हंस हो, कुमति, सुमति ह्वै जाय !

प्रकृति, ब्रम्हाण्ड अनुरूप हो, सौभाग्य तुरत मिलि जाय !!

शिष्य गुरु मिलि एक हो, मन होवे धनवान !

किसी चीज की कमी नहीं, सत्यनाम यदि जान !!

अज्ञान अविद्या सब मिटे, अंधकार मिटि जाय !

जीव विदेहीं तुरत हो, सन्मुख प्रभु ह्वै जाय !!

महल सोने का जमीन पर ही खड़ा होता है !

आदमी तन से नहीं मन से बड़ा होता है !!

मन हो बड़ा यदि सोने का महल होता है !

यदि अभी है छोटा मन, मिट्टी का घर ही होता है !!

यदि छोटे बनोगे तुम, लोग कुत्ता गधा मानेंगे !

बड़े बन गये यदि, शेर तुम्हें जानेंगे !!

मन अभी छोटा क्यों, इसका भेद जान लो !

होगा यह कैसे बड़ा, मुख्य यही जान लो !!

संगत मन की अभी, इंद्रियों से है केवल !

धार मन की बदल दो, संगत प्रभु से हो केवल !!

लिप्त इंद्रियों में है, इसी से कागा !

कर्म करता बहुत, पर अभी है अभागा !!

धार नीचे को है, इसी से बंधन !

धार प्रभु से जुड़े, प्रभु का हो वंदन !!

धार नीचे को है , यही है अविद्या !

धार यदि प्रभु से जुड़े, यही हो जाय विद्या!!

धार नीचे को है, इसी से है कुमति !

जोड़ दो धार प्रभु से, यही बन जाय सुमति !!

दृष्टि मन की ही एक, है बदलना केवल !

सभी कुछ स्वयं ही बदलेगा, पलटो मन को केवल !!

जोड़ना मन को है, सन्मुख प्रभु के होकर !

सभी कुछ स्वयं ही बदलेगा, उसी का होकर !!

धार नीचे को है, तभी तो अज्ञानी !

धार जो प्रभु से जुड़े, तुम्ही तो हो ज्ञानी !!

धार नीचे को है, जीवन है अंधकार !

धार जो प्रभु से जुड़े, एक प्रभु का दरबार !!

धार नीचे को है, इसी से होते कर्म !

धार जो प्रभु से जुड़े, कर्म होंवे अकर्म !!

धार नींचे को है, इसी से है माया !

धार जो प्रभु से जुड़े, यही तो है अमाया !!

दृष्टि नीचे को है, तभी तो भवसागर !

दृष्टि प्रभु से जुड़े, परमपद का सागर !!

धार नीचे को है, यही है कुदृष्टि !

धार ऊपर को हो, यही है विवेक दृष्टि !!

प्रकृति, ब्रम्हाण्ड से, बनी है क्यों दूरी !

दृष्टि नीचे को है, यही तो मजबूरी !!

प्रकृति, ब्रम्हाण्ड सब, अनुरूप होवे कैसे !

पलट दो धार मन की, बनो प्रभु जैसे !!

धार नीचे को है, तभी तो है जीव !

धार जो प्रभु से जुड़े, तुरत हो जाव पीव !!

धार नीचे को है, बने हो तुम देंही !

धार जो प्रभु से जुड़े, तुम ही हो बिदेंही !!

करना कुछ भी नहीं, सद्गुरु को केवल खोज लो !

शरण उसकी गहो, और धार मन की मोड़ लो !!

■ परमात्मा कहाँ है कैसा है

पिंड, अंड के पार है, सब देहीं के पार !

इंद्रिय, मन के पार है, सभी तत्व के पार !!

अंदर, बाहर है नहीं, न करता स्पर्श !

सभी गुणों से पार है, सभी पार हो अर्श !!

गो, गोचर के पार है, मन माया से पार !

ब्रम्ह, प्रकृति के पार है, ध्यान भजन के पार !!

आदि, अनादि, अखंड है, अचल, अलौकिक धार !

सत्य, अनामी, पूर्ण है, वही सभी का सार !!

अगम, अगोचर, अव्यक्त है, अतर्क, विदेह, अरूप !

चेतन, पूर्ण, अनाम है, अनहद नहीं स्वरूप !!

सात प्रकाश वह है नहीं, यह सब भव के कूप !

केवल सद्गुरु खोज लो, जीव तभी हो भूप !!

बंधन चौरासी कटे, भवसागर और पाप !

कर्म सभी अकर्म हो, मोक्ष, मुक्ति सब पास !!

मन कौवा से हंस हो, कुमति, सुमति ह्वै जाय !

प्रकृति, ब्रम्हाण्ड अनुरूप हो, सौभाग्य तुरत मिलि जाय !!

शिष्य गुरु मिलि एक हो, मन होवे धनवान !

किसी चीज की कमी नहि, सत्यनाम यदि जान !!

अज्ञान, **अविद्या** सब मिटे, अंधकार मिटि जाय !

जीव विदेहीं तुरत हो, सन्मुख प्रभु ह्वै जाय !!

विप्र, सुदामा "जीव" है, सन्मुख होना ईश !

तीनों मिलकर एक हो, जीव, जगत जगदीश !!

तीन लोक हों जीव के, प्रभु के सन्मुख होय !

जीव, प्रभु फिर दो नहीं, धार एक ही होय !!

पात्र है बनना जीव को, पॉजिटिव सदा विचार !

लालच झूठ को त्याग दो, गुस्सा मन से पार !!

मद, मत्सर को त्याग कर, शरणागति ह्वै जाव !

सदा स्वभाव को नम्र कर, सद्गुरु शरण में जाव !!

" राम की महिमा "

यह कलिकाल न साधन दूजा, योग, यज्ञ, जप, तप नहि पूजा !

कलियुग, ध्यान, भजन नहि ज्ञाना, एक अधार राम को जाना !!

कलियुग सम कोई युग नहीं, नर समान नहि देंह !

राम के सम कोई ईष्ट नहिं, सद्गुरु सम नहि कोय !!

जीव विमुख जो राम से, कैसे लह विश्राम !

सन्मुख होना राम के, दूजे से नहि काम !!

ब्रम्ह है रक्षक जीव का, ईष्ट है केवल राम !

सब कुछ मिलता राम से, दूजे का नहि काम !!

राम राज्य बैठे त्रैलोका, हर्षित भये गये सब शोका !

चार पैर है धर्म के, कलि में एक विलुप्त !

तीन पैर से चल रहा, जीव हो कैसे मुक्त !!

चौथे पैर को खोजना, यही जीव का लक्ष्य !

सन्मुख होना जीव को, आतम के प्रत्यक्ष !!

तीन लोक में क्यों फँसा, चौथे लोक को खोज !

लुक्का, छिप्पी जान कर, केवल आतम खोज !!

माया की लंका रहै, रावण मायावी होय !

माया की सीता रहै, मायावी मृग भी होय !!

तीन लोक में रम रहा, वह भी माया जान !

माया से है निकलना, ऐसा सीखो ज्ञान !!

“ पाँच ऋणों से मुक्त कैसे हो ”

पाँच ऋणों से मुक्त ह्वै, जानो जीव का लक्ष्य !

मन और मति को बदलना, होना धार प्रत्यक्ष !!

मात, पिता और पितृऋण, देव, गुरु ऋण होय !

इनसे कैसे मुक्त हो, भेद ना जाने कोय !!

श्रवण कुमार की कथा, सबने सुनी है जान !

अंधे माता – पिता है, सबके सुनो सुजान !!

अंधे माता – पिता को, सब तीरथ करवाय !

आँखें भी दिलवाय दे, वही सुपुत्र कहाय !!

सभी तीर्थ गुरु चरण में, आँखे सत और विवेक !

जो इनको खुलवाय दे, पुत्र वही है एक !!

गुरुमुख माता - पिता हो, गुरु चरणों में आस !

पूर्ण समर्पण चाहिये, और पूर्ण विश्वास !!

गुरुवाक्य ही मन्त्र हो, सद्गुरु का हो ध्यान !

पूजा केवल गुरु की, कृपा गुरु की जान !!

सहज अवस्था श्रेष्ठ है, मध्यम होता ध्यान !

तीर्थ यात्रा अधम है, पूजा मूर्ति अदान !!

सहज अवस्था प्रथम है, वर्तमान मन होय !

स्थिर रखना सुरत को, धार प्रकट तब होय !!

आतमघट भी प्रकट हो, धार प्रकट ह्वै जाय !

मन कौवा से हंस हो, मति, सुमति ह्वै जाय !!

लक्ष्य जीव के पूर्ण हो, मन सन्मुख ह्वै जाय !

इसके आगे गुप्त है, भेद गुरु से पाय !!

गुरुमुख माता – पिता हो, धार प्रकट ह्वै जाय !

पितृ, देव, गुरु ऋण सबै, तुरत मुक्त ह्वै जाय!!

दोनों आँखे भी मिले, मन कौवा से हंस !

मति भी तुरत ही सुमति हो, जीव रहे न अंश !!

जीव पूर्ण, मन पूर्ण हो, पूर्ण सभी हो कार्य !

मोक्ष, मुक्ति सब ही मिले, बचे न कोई कार्य !!

पाँचों ऋण से मुक्त ह्वै, जीव परमपद पाय !

चारों पद तब एक हो, दूजा नहीं दिखाय !!

सद्गुरु के इस भेद को, जीव जो जाने कोय !

लक्ष्य सभी वह पूर्ण कर, जीव, ईश ही होय !!

“ जीव ” का कायाकल्प

बंधन चौरासी कटे , भवसागर और पाप !

कर्म सभी अकर्म हो, **विद्या** , ज्ञानी आप !!

प्राण वायु से मुक्त ह्वै, जीव को होना पीव !

मन कागा से हंस हो, मन से मुक्त हो जीव !

मति स्थिर ह्वै सुमति हो, अँधा आँखें पाय !

जीव सदा सत में रहे, माया सब हटि जाय !!

लोक सात सब पार हों, पार हों सात शरीर !

देव, ब्रम्ह सब छोड़कर, जीव, ईश के तीर !!

नाम रूप सब छोड़कर, जीव, अनाम, अरूप !

जीव परमपद प्राप्त कर, परम लोक का भूप !!

नर से नारायण बना, जीव से बन गया पीव !

मोक्ष, मुक्ति सब प्राप्त कर, सन्मुख हो गया जीव

सद्गति और परमगति, परमतत्व को पाय !

परमधार से युक्त हो, जीव पूर्ण हो जाय !!

सार है " शिव " संसार का, तीन लोक का ब्रम्ह !

" सार का सार " है आत्मा,सन्मुख हो जीव तुरंत !!

पाना हो जिस वस्तु को, लक्ष्य भेदना सीख !

एक सीध तीनों करो, सुरत, वस्तु, जगदीश !!

सुरेशादयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903